वर्द्धमान News

Digital Edition — शिक्षा का उजियारा

Digital Edition | ब्यावर, 28 अगस्त 2025, गुरुवार | Email : vardhmannewsbwr@gmail.com | मूल्य : निःशुल्क





सबका खाता हुआ शून्य...

वर्द्धमान केम्पस में क्षमा वीरस्य भूषणम् का अद्भुत नज़ारा

जैन समाज के पर्युषण महापर्व के क्षमापना पर्व पर ब्यावर के वर्द्धमान गर्ल्स कॉलेज केम्पस में अद्भुत दृश्य नजर आया।

श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के पदाधिकारी एवं समिति द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थान के प्रतिनिधि एवं शैक्षणिक कर्मियों, शिक्षकों एवं छात्राओं ने आमने सामने कतारबद्ध खड़े होकर परस्पर एक दूसरे से क्षमा मांग कर वर्षभर की गलतियों का खाता शून्य किया। ब्यावर जिले के इतिहास में ऐसा पहला अवसर है जब हजारों छात्राओं एवं शैक्षणिक स्टाफ़ ने वर्द्धमान शिक्षण के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के सानिध्य में खड़े होकर 'मिच्छामि दुक्कडम' कहकर क्षमायाचना की. ख़ास बात इस क़तार में तमाम जाति, वर्ग ओर धर्म की छात्राओं ने क़ौमी एकता की अनुठी मिसाल पेश की।

इस कार्यक्रम में श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के अध्यक्ष सुनील खेतपालिया, मंत्री डॉ नरेन्द्र पारख, कोषाध्यक्ष देवराज लोढ़ा, सहमंत्री सुनील ओस्तवाल, शांतिलाल नाबरिया, प्रकाशचन्द गदिया, रमेशचन्द मेड़तवाल, दीपचंद कोठारी, चन्दूलाल कोठारी, प्रवीण खेतपालिया, सुरेश कांकरिया, प्रिंस ओस्तवाल, वैभव सकलेचा, दुलराज मकाना, चंदू लाल कोठारी, उत्तम चंद देरासरिया, गौतम गोखरू, धनपत राज श्री श्रीमाल, भंवरलाल गोठी पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल प्राचार्य धर्मेंद्र शर्मा, श्री नृसिंह अग्रसेन जैन विद्यापीठ की प्राचार्या डा. निवेदिता पाठक एवं वर्द्धमान रूट्स की प्राचार्या श्वेता नाहर, वर्द्धमान फैशन डिजाइनिंग एंड मेकअप आर्टिस्ट की प्रभारी छवि गरवाल, समिति कार्यालय प्रबंधक नेहा जैन, जनसम्पर्क अधिकारी बबलू अग्रवाल, खुशबू भाटी, ईशान सांखला, आई टी प्रभारी अजय चौधरी, छायाकार राहुल मौर्य एवं समस्त शैक्षणिक इकाईयों के संकाय सदस्यों ने शिरकत की।

पर्युषण-संवत्सरी महापर्व पर क्षमा को जीवन में उतारने का आव्हान

श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान कन्या पी. जी. महाविद्यालय में पर्युषण-संवत्सरी महापर्व की प्रांसगिकता एवं महत्व पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

तत्पश्चात महाविद्यालय सभागार में पर्युषण-संवत्सरी महापर्व के उपलक्ष में क्षमायाचना की महत्व पर प्रकाश डालता हुआ गीत प्रस्तुत किया गया। वर्द्धमान शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री सुनील खेतपालिया ने बताया कि महावीर स्वामी के दो मूल सिद्धांत 'अंहिसा परमो धर्म' व जियो और जीने दो जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

इस अवसर पर मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख ने संवत्सरी महापर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस महापर्व का एक मात्र उद्देश्य आत्मा का विकास है जिसमें सब अपनी क्षमतानुसार अपनी आत्मा की शुद्धि करते है। यह पर्व मात्र जैन धर्म का ही नहीं बल्कि यह सार्वभौम पर्व है। संवत्सरी एक ऐसा अवसर है जो हमें महाविनाश से महानिर्माण की ओर अग्रसर करते हुए जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है। पर्युषण पर्व सात दिन त्याग, तपस्या, शास्त्र-श्रवण व धर्म आराधना के साथ मनाने के बाद आठवें दिन संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया जाता है। एक- दूसरे से क्षमा याचना कर मैत्री भाव की ओर कदम बढ़ाते है। इस दिन वर्ष पर्यन्त किये गये पापों के लिए प्रायश्चित कर अपने मन को निर्मल बना सकते है।

महाविद्यालय प्राचार्य डा. आर. सी. लोढा ने पर्युषण को महापर्व बताते हुए कहा कि यह पर्व आत्मा के समीप रहने का पर्व है। यह पर्व बुरे कर्मों का नाश करके हमें सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। भगवान महावीर के सिद्धांतों को ध्यान में रखकर हमें निरंतर और खासकर पर्युषण के दिनों में आत्मसाधना में लीन होकर धर्म के बताए गए रास्ते पर चलना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय अकादमिक प्रभारी डॉ. नीलम लोढा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर सभी संकाय सदस्यों सहित सभी छात्राएं उपस्थित रही।





पर्यूषण एवं दसलक्षण पर्व

पर्यूषण एवं दसलक्षण पर्व जैन धर्म का एक प्रमुख और पवित्र पर्व है, जो आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के लिए मनाया जाता है। इस पर्व के दौरान, जैन अनुयायी आत्म-संयम, अहिंसा, और तपस्या के मार्ग पर चलते हुए अपने जीवन को पवित्र और शुद्ध बनाने का प्रयास करते हैं। यह पर्व हमें अपने कर्मों का विश्लेषण करने, उन्हें शुद्ध करने, और आत्मा की शांति प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

इस पर्व के दिनों में हम अपने विचारों, वचनों और कर्मों को शुद्ध करके, अपने अंदर के दोषों को दूर करने का संकल्प लेते हैं। इन दिनों हमें आत्म-निरीक्षण, प्रार्थना, और ध्यान के माध्यम से आत्मा की गहराइयों में झाँकने का अवसर मिलता है।

जितना हम अपने अंदर की कमजोरियों को पहचानेंगे और उन्हें दूर करेंगे, उतना ही हम पर्यूषण पर्व के सच्चे अर्थ को समझ सकेंगे।

जैसे पर्यूषण पर्व आत्मा की शुद्धि का पर्व है, वैसे ही इन दिनों का चैलेंज भी हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने का अवसर प्रदान करता है। इस चैलेंज के माध्यम से हम अपने भीतर की नकारात्मकताओं को दूर कर सकते हैं और सकारात्मकता को अपने जीवन में ला सकते हैं।

यह चैलेंज न केवल हमारी आत्मा की शुद्धि में सहायक होगा, बल्कि हमारे समाज के अन्य सदस्यों को भी प्रेरित करेगा। हमें इस अवसर को अपनाकर अपने जीवन में एक नई दिशा देने का प्रयास करना चाहिए। आइए, हम सभी इस 8/10 दिनों के चैलेंज को स्वीकार करें और अपने जीवन को सच्चे अर्थों में शुद्ध और पवित्र बनाएं। पर्यूषण एवं दसलक्षण पर्व के शुभ अवसर पर, अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए इस चैलेंज में भाग लें और दूसरों को भी प्रेरित करें।















गोठी स्कूल में मनाया पर्युषण एवं क्षमापना पर्व



श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित भंवर लाल गोठी पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पर्युषण-संवत्सरी पर्व के अंतर्गत क्षमा-याचना का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभांरभ नवकार मंत्र से किया गया जो कि अहिंसा, प्रेम, करूणा व विश्वास सृजन का प्रतीक है। वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख ने विद्यार्थियों को संवत्सरी पर्व क्यों मनाया जाता है? इसका हमारे जीवन में क्या महत्व है? उन्होनें इसे आत्मशुद्धि,संयम,करूणा का पर्व बताते हुए कहा कि यह पर्व हमें वर्ष में एक बार अपने भीतर झॉकने का अवसर प्रदान करता है,साथ ही उन्होंने अध्यापक व विद्यार्थियों से अनुरोध किया कि सवत्संरी के अवकाश को व्यर्थ न जाने दे इस दिन को साधना के रूप में मनाए, स्वाध्याय करें, बड़ों का सम्मान करें, अपने मन, कर्म, वचन से किसी को आघात पहुँचाने से बचे व सभी से दिल से क्षमा माँगें।

प्राचार्य धर्मेन्द्र शर्मा,उपप्राचार्या श्रीमती सुनिता चौधरी ने इस पर्व को अपनी आंतरिक बुराइयों को समाप्त करने, आत्मचिंतन व क्षमा करने का प्रतीक बताया और गलतियों को क्षमा करने,बडों का आदर एवं छोटो से प्रेम करने तथा जीवन में सदैव सत्य,अहिंसा और करूणा का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी।

तत्पश्चात सभी शिक्षकगणों व विद्यार्थियों द्वारा सुन्दर भजन क्षमा करें और क्षमा मांग ले, जीत है इसमें हार नहीं... की प्रस्तुति दी गई। साथ ही बालिकाओं द्वारा नवकार मंत्र महामंत्र पर नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति दी गई।

कक्षा बारहवीं की छात्रा सेजल सोनी ने पर्युषण 'आत्मा का उत्सव' बताते हुए कविता का सुमधुर, सस्वर वाचन किया गया, कक्षा दसवीं के विद्यार्थी अरनम जैन पयुर्षण के महत्व पर अति सुन्दर विचार प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को एक कहानी के माध्यम से अपने मन का शुद्ध व शांत कैसे करें। समझाया साथ ही बताया कि हम दूसरों की गलतियों को माफ करे और अपनी गलतियों के लिए माफी माँगे।

तत्पश्चात नन्हे बालक समृद्ध जैन ने अति सुन्दर भजन के माध्यम से सवंत्सरी पर्व का गुणगान किया। वैर-भाव न रखने की प्रेरणा दी। इस पर्व पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था - जीवन मे क्षमा का महत्व जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया जिसमें प्रथम स्थान पर समकित जैन, द्वितीय स्थान पर हिरेन जैन तथा तृतीय स्थान सिद्धी शर्मा व पियूष कुन्दानी ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम के दौरान वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेन्द्र पारख, शाला निदेशक डॉ. आर. सी. लोढ़ा, प्रधानाचार्य धर्मेन्द्र कुमार शर्मा उपप्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता चौधरी, सहित सभी स्टाफ सदस्य व बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित होकर सभी ने एक दूसरे से क्षमा याचना की। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनुपमा दाधीच ने किया।

गणपति बप्पा मोरया...

वर्द्धमान रूट्स में धूमधाम से मनाया गणेशोत्सव...









वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थान वर्द्धमान इंटरनेशनल स्कूल (वर्धमान रूट्स) में बड़े ही हर्षोल्लास और धार्मिक श्रद्धा के साथ गणेश चतुर्थी का पर्व मनाया गया। गणपति जी की प्रतिमा को विद्यालय प्रांगण में स्थापित किया गया।

पूरे वातावरण में गणपति बप्पा मोरया के जयघोष से उत्साह और भक्ति का संचार हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मंत्रोच्चारण और दीप प्रज्वलन के साथ हुई। बच्चों ने गणेश वंदना प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें नृत्य, गीत और नाटक के माध्यम से गणपति बप्पा की महिमा का वर्णन किया गया।

विद्यालय के प्राचार्य श्रीमती श्वेता नाहर जी ने अपने संबोधन में कहा कि गणेश जी बुद्धि, ज्ञान और समृद्धि के देवता हैं। हमें उनके जीवन से यह सीख मिलती है कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य और विवेक बनाए रखना चाहिए।

समारोह के अंत में गणपति विसर्जन का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं ने भजनों के साथ भव्य शोभायात्रा निकाली। गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ के जयघोष से वातावरण गूंज उठा। अंत में गणेश प्रतिमा का विधिवत विसर्जन किया गया और सभी ने मिलकर गणपति बप्पा से विद्यालय एवं विद्यार्थियों के उज्वल भविष्य की कामना की।

साप्ताहिक
वर्द्धमान News
Digital Edition शिक्षा का उजियारा

Education is the most
Powerful weapon which you
Can use to change the world

ब्यावर
28 अगस्त 2025, गुरुवार

अहिंसा और क्षमा का दिया अमूल्य संदेश











श्री नृसिंह अग्रसेन जैन विद्यापीठ, ब्यावर में जैन पर्यूषण महापर्व पर 'अहिंसा रैली' का आयोजन...



जैन धर्म के सबसे पावन पर्व पर्यूषण संवत्सरी महापर्व एवं क्षमायाचना पर्व के अवसर पर श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री नृसिंह अग्रसेन जैन विद्यापीठ (नाज) में अहिंसा रैली का आयोजन किया गया। विद्यालय प्रांगण से शुरू हुई यह अहिंसा एवं शाकाहार रैली विद्यालय के समीप मुख्य मार्गों से होती हुई पुनः विद्यालय पहुँची। रैली में विद्यार्थियों ने हाथों में आकर्षक तख्तियां व बैनर थाम रखे थे, जिन पर अहिंसा, शाकाहार, पर्यावरण,क्षमा और मैत्रीभाव के संदेश लिखे थे। रैली के दौरान बच्चों के गगनभेदी नारों से क्षेत्र का वातावरण गूंज उठा और हर कोई इस अनोखी पहल की सराहना करता नजर आया।

बच्चों ने दिया अनोखा संदेश

रैली में बच्चों ने सामूहिक रूप से नारे लगाते हुए समाज को यह संदेश दिया कि जीव मात्र पर दया करो, अहिंसा एवं शाकाहार को अपनाओ, और क्षमा से रिश्ते संवारो।

कुछ प्रमुख स्लोगन इस प्रकार रहे:

**मन, वचन, कर्म से हुई भूलों की क्षमा माँगते हैं,
मैत्री और सद्भाव से रिश्ते सँवारते हैं।**

**क्षमा में है शक्ति, क्षमा में है शांति,
यही है जीवन की सच्ची भ्रांति।**

**हिंसा छोड़ो, करुणा अपनाओ,
अहिंसा से जीवन में प्रकाश फैलाओ।**

**शाकाहार है तन-मन का उपचार,
स्वस्थ जीवन का यही है आधार।**

**न द्वेष, न बैर, न कोई भेदभाव,
सबसे रखो केवल मैत्री भाव।**

समाज को मिला प्रेरणा संदेश

इस अवसर पर श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ. नरेंद्र पारख एवं शैक्षणिक निदेशक डॉ. आर.सी. लोढ़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि – नव पीढ़ी यदि शाकाहार और अहिंसा के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारेगी तो समाज में शांति, सद्भाव और प्रेम स्वत: स्थापित होगा। क्षमा की भावना ही सच्चे मानव धर्म का परिचायक है।

प्राचार्य और शिक्षकों की भूमिका

विद्यालय की प्राचार्या डॉ. निवेदिता पाठक ने बच्चों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की गतिविधियां बच्चों में मानवीय संवेदनाओं और संस्कारों को विकसित करती हैं।

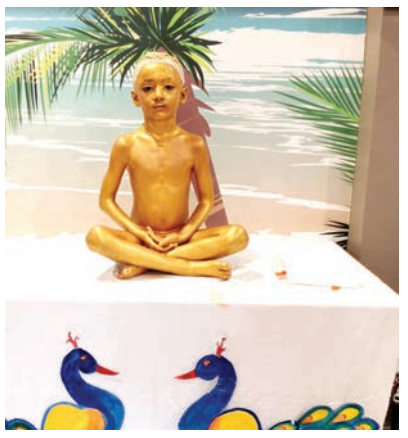
उप-प्राचार्य नागेश राठौड़, कार्यालय अधीक्षक अजय चौधरी, समस्त शिक्षकगण एवं संकाय सदस्यों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई।

सामूहिक क्षमायाचना और समापन

रैली के बाद विद्यालय प्रांगण में सामूहिक क्षमायाचना का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों ने एक-दूसरे से क्षमा माँगते हुए आपसी सौहार्द और मैत्रीभाव का संदेश दिया। इस अवसर पर वातावरण पूरी तरह शांतिपूर्ण और आध्यात्मिक बना रहा।

अंत में सभी ने सामूहिक रूप से क्षमापना पर्व मनाते हुए संकल्प लिया कि आने वाली पीढ़ी को शाकाहार, अहिंसा और क्षमा के मार्ग पर प्रेरित करेंगे।

वर्द्धमान रूट्स के बच्चों ने जानी पर्युषण पर्व की महत्ता







श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति ब्यावर द्वारा संचालित शिक्षण संस्थान वर्द्धमान इंटरनेशनल स्कूल (वर्द्धमान रूट्स) में पावन पर्युषण पर्व बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। यह पर्व जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है, जो आत्मशुद्धि, संयम, करुणा और क्षमा का संदेश देता है।

पर्व तो बहुत आते हैं, पर पर्युषण आत्मा को जगाने वाला पर्व है।आज हम केवल उत्सव नहीं मना रहे, हम आत्मा के दर्पण को साफ कर रहे हैं।

पर्युषण हमें सिखाता है-अपनी गलतियों को पहचानना ही सच्ची साधना है।

और दूसरों की गलतियों को माफ करना ही सच्चा धर्म है।

पर्युषण पर्व केवल आठ दिन का नहीं, यह तो जीवन की राह दिखाने वाला दीप है।

विद्यालय का वातावरण इस अवसर पर भक्ति, शांति और सद्भाव से भर गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। बच्चों ने भक्ति गीत और नवकार मंत्र से वातावरण को पवित्र बना दिया। इसके बाद विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियाँ दी गईं। छोटे बच्चों ने पर्युषण पर्व पर आधारित कविताएँ सुनाईं और नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने सुंदर धार्मिक भजन गाए, जिससे सभी उपस्थितजन भावविभोर हो गए।

मंच पर विद्यार्थियों ने पर्युषण पर्व का महत्व बताते हुए नाटक प्रस्तुत किया, जिसमें क्षमा, अहिंसा और आत्मसंयम का संदेश बड़े ही रोचक और सरल रूप में दिखाया गया। नाटक के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया कि सच्ची वीरता लड़ाई-झगड़े में नहीं, बल्कि क्षमा करने में है।

विद्यालय की प्राचार्या श्वेता नाहर ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में कहा कि क्रोध से बड़ा शत्रु कोई नहीं।

और क्षमा से बड़ा मित्र भी कोई नहीं।

पश्चाताप से आत्मा हल्की हो जाती है और क्षमा माँगने से हृदय पवित्र हो जाता है।-पर्युषण पर्व हमें जीवन में सच्चा अनुशासन अपनाने की प्रेरणा देता है। यह हमें सिखाता है कि हम दूसरों की गलतियों को क्षमा करें और स्वयं की गलतियों के लिए क्षमा माँगें। इसी में मानवता की सच्ची सुंदरता है।

समारोह के दौरान विद्यार्थियों ने सुंदर समूहगान और कोरल प्रस्तुति भी दी। जीयो और जीने दो क्षमा वीरस्य भूषणम् तथा मिच्छामि दुक्कडम् जैसे संदेश से भरे गीतों ने सभी के मन को छू लिया। बच्चों की इन प्रस्तुतियों ने पूरे समारोह को और भी जीवंत बना दिया।





कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर मिच्छामि दुक्कडम् कहा और एक-दूसरे से क्षमा याचना की। वातावरण में एक अद्भुत शांति, सौहार्द और भाईचारे की अनुभूति हुई।

इस प्रकार यह पर्व पर्युषण का आयोजन विद्यालय परिवार के लिए एक अविस्मरणीय स्मृति बन गया। सभी ने यह संकल्प लिया कि वे अपने जीवन में संयम, करुणा और क्षमा के मूल्यों को अपनाएँगे और समाज में शांति व सद्भावना फैलाएँगे।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य महोदया श्वेता नाहर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य, कर्मचारीगण छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रही।



सादर जय जिनेन्द्र

क्षमा मांगने का सबसे पहला कदम है स्वयं से क्षमा मांगना। हमारी आत्मा शुद्ध और पवित्र सोने जैसी आई थी, लेकिन हमने इसे विकारों जैसे काम, क्रोध, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, लालच और आलस्य से मलिन कर दिया। हमें सबसे पहले अपनी आत्मा को क्षमा करना चाहिए, क्योंकि हमने इसे इन नकारात्मक भावनाओं से दूषित किया है। दूसरा, हमें उन लोगों से क्षमा मांगनी चाहिए जो हमारे साथ रहते हैं, जिनके प्रति हम अक्सर निंदा, आलोचना और उपेक्षा का भाव रखते हैं। हम उन्हें ये दिखाने का प्रयास करते हैं कि हम उनसे बेहतर हैं, और अपने अहंकार में उनकी उपेक्षा करते हैं। तीसरा, हमें उन लोगों से क्षमा मांगनी चाहिए जो हमें नापसंद करते हैं, हमसे ईर्ष्या करते हैं, और हमारे साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। ये लोग हमारे दिमाग में जगह घेर लेते हैं और हम उन्हें नफरत के कारण बार-बार सोचते रहते हैं, जिससे हमारे चारों ओर नकारात्मकता फैलती है।

यह दिन पुनर्संयोजन का है, और ऐसे लोगों को क्षमा करने का भी नहीं है, जिनसे हमारा कोई व्यक्तिगत संबंध या संवाद नहीं हुआ है। जिनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें माफ़ करने का सवाल ही नहीं उठता। हमें उन लोगों को माफ़ करना चाहिए, जो हमारी ज़िंदगी में नहीं रहना चाहते, क्योंकि जीवन उनके बिना भी चल सकता है। उनका बोझ अपने मन पर न रखें। चौथा, हमें अपने अहंकार को सोशल मीडिया पर दिखा कर या दूसरों को खुश करने के लिए क्षमा करने का नाटक नहीं करना चाहिए। नकली मुस्कान और व्यवहार से कोई प्रभावित नहीं होता।

हमें अपनी वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिए और अपने जीवन में सकारात्मकता का चयन करना चाहिए। जब हम अपने अंदर की नकारात्मकता को दूर करेंगे, तो हमारा आभामंडल स्वच्छ हो जाएगा और हम सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करेंगे। इस सच्चाई को समझें कि हमसे भी बुरी स्थिति में लाखों लोग हैं और हमसे बेहतर भी लाखों लोग हैं। दुनिया उन्हीं लोगों को याद रखती है जो दूसरों के लिए कुछ करते हैं। जागें, उठें और अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक न रुकें।

पर्वाधिराज पर्युषण

आकर के इतनी जल्दी क्यों,
चला जा रहा पर्व पर्युषण?
अभी अभी तो आया ही था,
भरा नहीं था हम सबका मन।

धर्म भाव की ज्योति जगाकर,
चला जा रहा पर्व पर्युषण।
बहा भाव भक्ति की गंगा ,
विदा ले रहा पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी....

निकट आत्मा के रहने की,
सतत साधना पर्व पर्युषण।
जप,तप,त्याग,तितिक्षा का है,
अद्भुत अवसर पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी....

अन्तरमन में दृष्टि डालकर,
करे आत्मा का प्रक्षालन।
वीतराग के चरण कमल में,
स्व-अर्पण का पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी....

मोक्षमार्ग में डग भरने का,
अनुपम मौक़ा पर्व पर्युषण।
सत्पुरुषों के गुणचिन्तन का,
है सुयोग ये पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी.....

मैत्री, करूणा, क्षमाभाव को,
विकसाने का पर्व पर्युषण।
संयम को जाग्रत करने का,
मंगलकारी पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी.....

नवजीवन पुष्पित करने का,
कैसा सुन्दर पर्व पर्युषण।
आत्मगुणों को महकाने का ,
लाजबाब यह पर्व पर्युषण।
आकर के इतनी.....

आत्मजागरण कर जीवन को,
उज्जवल करना पर्व पर्युषण।
राग - द्वेष के बन्ध काटने का
है अवसर पर्व पर्युषण।

वर्द्धमान महाविद्यालय में मनाया तप, त्याग और क्षमा का महान पर्व संवत्सरी







श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति द्वारा संचालित श्री वर्द्धमान कन्या पी.जी. महाविद्यालय में पर्यूषण-संवत्सरी महापर्व धर्म साधना के साथ मनाया

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ आर. सी. लोढ़ा ने बताया कि संवत्सरी एक ऐसा अवसर है जो हमें महाविनाश से महानिर्माण की ओर अग्रसर करते हुए जीवन निर्माण की प्रेरणा देता है। संवत्सरी शुद्ध रूप से आत्म निरीक्षण, आत्म चिंतन, आत्म मंथन व आत्म शोधन का पर्व है।

इस अवसर पर श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ नरेन्द्र पारख ने संवत्सरी महापर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस महापर्व का एक मात्र उद्देश्य आत्मा का विकास है जिसमें सब अपनी क्षमतानुसार अपनी आत्मा की शुद्धि करते है। यह पर्व मात्र जैन धर्म का ही नहीं बल्कि यह सार्वभौम पर्व है।

कार्यक्रम में महाविद्यालय में जीवन विज्ञान एव जैन विद्या विषय की व्याख्याता सुनीता जैन ने अपने उद्बोधन ने बताया कि पर्यूषण पर्व सात दिन त्याग, तपस्या, शास्त्र-श्रवण व धर्म



आराधना के साथ मनाने के बाद आठवें दिन संवत्सरी महापर्व के रूप में मनाया जाता है। इस दिन वर्ष पर्यन्त किये गये पापों के लिए प्रायश्चित कर अपने मन को निर्मल बना सकते है। अत: हमें हृदय से अपने किये गये कर्मों की समालोचना करनी चाहिए।कार्यक्रम के अंत में समस्त संकाय सदस्य एवं छात्राओं को जैन धर्म के सिद्धांतो अहिंसा, सत्य, ब्रहाचर्य और अपरिग्रह का पालन करने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर सभी संकाय सदस्य एवं बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यता निधि पंवार ने किया।





लिया संकल्प...

पर्युषण महापर्व पर ब्यावर के भंवरलाल गोठी पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल में श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति के मंत्री डॉ नरेंद्र पारख विद्यालय के स्टाफ एवं विद्यार्थियों को अंहिसा,जीव-दया, शाकाहार, क्षमा-भाव अपनाने की शपथ दिलवाई।



